Volume 9, Issue 1, (Jan-March 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

^^jk"Vªhkk"kk हिन्दी और उसका भविश्य''

डॉ0 शर्"k ckyk jkor@iokj
fgUnh foHkkx jk0 Luk0 egk0 vxLrefu
ftyk&:nziz;kx&¼mRrjk[k.M½

निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे परस्पर व्यवहार के लिये भाषाई माध्यम् की vko"यकता होती हैं किन्तु भाषा सिर्फ विचारों के संप्रेषण का माध्यम् न gkdj Ikekftd मनुष्य के संप्रेषण का ऐसा ek/;e g ftIdh Igk;rk I og fo"ष परिस्थिति में विf"ाष्ठ iz;ktu dh सिद्धि हेतु उसका प्रयोग करता हैं। भाषा एक सामाजिक यथार्थ हैं जिसका fodkI ekuo d Ikekftd thou d fofHkUu mn";k dh ifrZ d fy; gkrk gA vc fgUnh doy IkfgfR;d vkj cky&pky की भाषा न रहकर विभिन्न क्षेत्रों मे अपनी mikn;rk d dkj.k fofHkUu iz;ktuk की भाषा बन गई हैं। भारतीय संविधान के रचनाकारों ने संविधान के अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागxjh fu/kkfjr dh gA lu 1910 e fgUnh IkfgR; IEeyu dh LFkkiuk gbA egkeuk i0 मदनमोहन मालवीय, पुरूषोत्तमदास टंडन प्रभूति ने हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास को दृष्टिगत j[kr g, bI ILFkk dh LFkkiuk dh ijUrq Ikj n"k dk ,d I= e TkkMu के लिए एक राष्ट्रभाषा की परिकल्पना करने वाले माननीय व्यक्तियों में आचार्य के"kopUn सेन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गॉधी, सुभाषचन्द्र ckI] bR;kfn d uke vknj d साथ स्मरण किये जा सकते हैं। भारत एक बहुभाषी दे"k g fdUrq IeLr n"k dk ,d I= e ck/ku d fy; राष्ट्र d d.k/ाारों ने जिस भाषा का चयन किया था वह हिन्दी थी। bIe Ing ugh g fd gekj n"ा में कई भाषायें हिन्दी से vf/kd ikphu vkj Ien/k gk fdUrq o ,d सीमित क्षेत्र की भाषा होने के कारण पूरे दे"ा की सम्पर्क भाषा के रूप मे

dke नहीं कर सकती। महात्मा गॉधी ने राष्ट्रीय एकता के लिये राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी dh igpku dh] vkj mlh LorU=rk vkUnksyu dk l”kDr ek/;e cuk;kA Hkkjr ljdkj u fulng le;≤ ij o lHkh dne mBk,, tk fgUnh dk n”rj की राजभाषा के रूप e fodflr djus d fy; vko”यक थे। तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों के चयन और निर्माण के लिये वर्ष 1961 में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली आयोग की स्थापना की xbA lu 1918 e fgUnh lkfgR; lEeyu dk vkBok vf/ko”ku bnkj e lEiUu gvkA bl vf/ko”ku d lHkkifr egkRek xk/kh FkA ml vf/ko”ku e egkRek xk/kh th u राष्ट्रभाषा की स्पष्ट 0;k[;k dh vkj fgUnhrj in”kk e mld ipkj dh vko”;drk ij जोरदार शब्दों में समर्थन fd;kA mUgksu dgk Fkk ^lkfgR; dk in”r भाषा की भूमि जानने ij gh fuf”चत हो सकता हैं। यदि हिन्दी भाषा की भूमि सिर्फ उत्तर प्रांत होगी तो lkfgR; dk in”r संकुचित रहेगा। हिन्दी भाषा राष्ट्रीय भाषk gksxh rk lkfgR; dk foLrkj भी राष्ट्रीय होगा। जैसे भाषक वैसी भाषा। भाषा सागर में स्नान करने के लिये पूर्व–पf"pe] nf{k.k&mRrj l iuhr egkRek vk;x rk lkxj dk egRo Lu.ku djus okyk d vu:i होना चाहिये। इसलिये साहित्य की दृष्टि से भी हिन्दी का स्थाu fopkj.kh; gA

गॉधी जी ने राष्ट्रभाषा और प्रान्तीय भाषाओं की चर्चा करते हुए अपना दृढ़ नि”p; प्रकट किया था कि मेरा दृढ़ अभिप्राय है कि जब तक हम भाषा को राष्ट्रीय और अपनी–अपनी प्रान्तीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नही देंगे–तब तक स्वराज्य की सब ckतें निरर्थक है। हिन्दुस्तान को अगर सचमुख एक राष्ट्र बनाना हैं तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा हिन्दी ही बन सकती हैं क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त हैं वह किसी दूसरी भाषा को कभी नही मिल सकता है। गॉधीजी ने न केवल हिन्दी को एक राष्ट्रभाषा d रूप में प्रतिष्ठित करना चाहा, बल्कि वे उसे व्यापार, वाणिज्य, न्याय तथा प्र”kklu dh भी भाषा बनाने के पक्षधर थे वह अंग्रेजी के स्थान ij fgUnh dk iतिष्ठित करना चाहते थे। xk/kh th मातृभाषा के प्रबल समर्थक थे परन्तु साथ ही वे वि”व की अन्यान्य भाषाओं का Kku iklr djus ij Hkh tkj nrs FkA mudk icy fo”वास था कि मातृभाषा के माध्यम् से अपने चिंतन का स्पष्ट अभिव्यक्तिकरण हो सकता हैं। भाषा के सम्बन्ध में गांधी जी ने

Volume 9, Issue 1, (Jan-March 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

le;≤ ij viu fopkj 0;Dr fd; gA fd ;od vkj ;ofr;k dk vxth vkj nfu;k dh nljh Hkाषाएं खूब पड़े। लेकिन mul e vk"kk d:xk fd o viu Kku dk ilkn Hkkjr dk lkj llkj dk mlh rjg inku djx tl ckl] jk;] vkj Lo; dh o johUnukFk u inku fd;k FkkA

tc rd fgUnh dk jkth jkVh d lkFk ugh tkMk tk;xk rd rd bld lEi.k dk;kUo;u dh vk"kk djuk 0;Fk gA fgUnh dk vxth d leku lHkh {k=k e tc rd mld fodkl liuk n[kuk ex&ejhfpdk d leku gkxkA fgUnh e if"kf{kr Lukrdk को भी प्रतिष्ठा नही मिलेगी। तब तक अंग्रेजी में प्रशिक्षित स्नातकों को प्रतिष्ठा नहीं feyxhA led{k lHkh ink ij fu;fDr gkuh pkfg; tc rd fgUnh pkfg; tc rd हिन्दी की उपेक्षा शासन के स्तर पर होगी तब तक हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल नही हैं। हिन्दी राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की कड़ी हैं। इस कड़ी को हम जितना मतबूत बनाएंगे mruh gh l{kerk d lkFk og Hkkjrokfl;k d fnyk e viuk LFkku cuk ldrh gA राष्ट्रभाषा हिन्दी ही इस दे"ा के नागरिकों में राष्ट्रीय ,drk o LokfHkeku tkxr dj ldrh gA fcuk राष्ट्रभाषा के कोई भी राष्ट्र अपने को सम्पूर्ण रूप में अभिव्यक्ति नही दे सकता।

राष्ट्रभाषा की अवहेलना करना राष्ट्रध्वल, राष्ट्रगीत, lfo/kku dh vogyuk dju d leku gA bl n"k d lEekfur ukxfjd gku d ukr iR;d 0;fDr dk ;g drR; gk जाता हैं कि वह संविधान सम्मत राष्ट्रभाषा का आदर करें और इसे अपना वास्तविक स्थान प्रदान करने में अपनी भूमिका का निर्वाह करें। इस राष्ट्रीय यज्ञ में साथk nuk iR;d ukxfjd dk drR; gA of"odhdj.k d lnHk e tgk rd fgUnh भाषा का सम्बन्ध है। हिन्दी न सिर्फ भारत की राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा है वरन् वि"o e ckyh tku okyh सबसे बड़ी भाषा हैं। आर्थिक उदारीकरण और मुक्त वि"o 0;kikj i.kkyh d dkj.k mldk of"वकीकरण हो रहा हैं। भाषा क सौन्दर्यमूलक आयाम में भाषा ltukRed gkrh gA जिसका विकास साहित्यिक भाषा के रूप में होता हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, समालोचना आदि साहित्यिक विधाओं में भाषा का यह रूप idV होता हैं। भाषा के दूसरे

Volume 9, Issue 1, (Jan-March 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kk/k if=dk

:i dk lc/k gekjh lkekftd thou dh vko";drkvk dh ifr l gA tk 0;fDrijd होकर भी समाज सापेक्ष होती हैं। इसमें भाषा किसी उद्‌"; fo"ाष या कार्यावि"ाष के लिए प्रयुक्त होती हैं। अतः हिन्दी भाषा किसी वि"ाष वर्ग, सम्प्रदाय या क्षेत्र की भाषा नही हैं। fgUnh भाषा का उद्‌भव तो स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन की अवधि के दौरान हुआ। दे"k d विभिन्न क्षेत्रों के नेताओं ने विभिन्न क्षेत्रों में परस्पर विचार–विनिमय के लिये एक भाषा का विकास किया, जिसे हिन्दी के नाम नागरिकों के लिये भाषा का प्र"u ,d HkkoukRed ennk हैं। भाषा में भी एकबद्‌ध करने की महान शक्ति हैं और यह राष्ट्रीय एकता के लिए एक शक्ति"ााली उपकरण हैं। लोकतंत्र में किसी भी भाषा को जनता की इच्छा के विरूद्ध नही थोपा जा सकता हैं, भाषा विचार और अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं हैं। बल्कि mPprj Lrj ij U;k;k/kh"kk d fy, mud fu.k; nu dh ifØ;k dk ,d vfHkUu Hkkx हैं। हम सभी के मन में यह सवाल कचोटता हैं कि आखिर हमारी राष्ट्रभाषा के साथ ऐसा lkrykk 0;ogkj D;k fd;k tk jgk gA bld cgr lkj dkj.k gA yfdu lcl cMk tk dkj.k g og ;g g fd vefjdk tl reke cM n"k viuk 0;kikj lep lkj e Qyk nuk pkgr gA fgUnh d ifr mnklhurk dk ,d dkj.k ;g Hkh g fd dEI;Vj vku l vc lkjk dkedkt vxth e gh gkxk। जबकि कम्प्यूटर की कोई भाषा नही होती। उस पर किसी भी भाषा में काम किया जा ldrk gA tc dEI;Vj dk inki.k Hkkjr e gk jgk Fkk geu rHkh bl vxth vkj fgUnh e lkFk&lkFk yku dk i;Ru ugh fd;kA ;fn dUnh; ljdkj bld fgUnh QkV Hkh lkFk&lkFk miyC/k djk nrhA Hky gh dN le; vkj yx tkrk rk dEI;Vj ij doy vxth dk gh otLo LFkkfir u gkrk fdUr vHkh rk nj ugh g, gA depkfj;k dk dEI;Vj ij fgUnh e dke dju d fy; ifjr fd;k tk; vkj dkb Hkh dEI;Vj doy vxth d fy; u [kjhnk tk,A fgUnh vkt fo"व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हैं। संसार में सबसे अधिक बोली और le>h tku okyh सबसे बड़ी भाषाओं में हिन्दी का स्थान दूसरा हैं। हिन्दी के लिये यह गौरव की बात हैं कि मंगल पर भेजे गये अंतरिक यान पर 'भारत' शब्द देवनागरी में ही अंकित किया गया हैं। हिन्दी को अंग्रेजी के स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिये निि"pr dkykof/k fu/kkfjr dh tk,A vkj mle fdlh Hkh idkj dk lk/ku u fd;k tk;A fgUnh e if"kf{kr Lukrdk

को केन्द्रीय शासन के समस्त मंत्रालय, विभागों में, निगमों, बैंको, उपक्रमों तथा कार्यालयों में परराष्ट्र मंत्रालयों के अतिरिक्त बिना किसी प्रकार के भेद–भाव के नौकरियk nh tk;A संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को मान्यता दिलाई जाए। जब तक अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी dk vxj eku;rk ugh feyxh rc rd fgUnh dh mi{kk gkrh jgxhA Hkkjr d Lor= gku ij ,d fcfV"k i=dkj u xk/kh th l ln"k ekxk rc xk/kh th u rjUr dg fn;k FkkA ^nfu;k l dg nk fd egkRek xk/kh vxth Hkwy x;k g** ¼egkRek xk/kh d fopkj½

गांधी जी राष्ट्रीय अस्मिता के प्रबल पक्षधj FkA वे राष्ट्रभाषा का bruk egRo nr Fk fd fdlh

वे राष्ट्रभाषा को इतना महत्व देते थे कि किसी भी मूल्य पर वे भाषा के स्तर पर समझौते के लिए तैयार न थे। गांधीजी सुनहरे भारत के भविष्यद्रष्ट्रा थे वे ऐसे स्वप्नद"kh Fk fd Hkkjr fo"o के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में परिवर्तित हो। मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के lEcU/k e xk/kh th dk n< fu"p; mudh ok.kh e lo= e[kfjr gvk gA n"k d सामाजिक–आर्थिक विकास में भाषा एक महत्वपूर्ण औजारों के रूप में कार्य करती हैं। turk d ljdkjh r= d chp cgrj le> vkj rky&ey dk fodkl turk }kjk व्यापक स्तर पर प्रयुक्त भाषा के माध्यम से ही संभव होता हैं। जनता के बीच राजभाषा के प्रति जितनी जागरूकता पैदा होगी सरकारी–तंत्र भी उसके प्रति उतनी संवेदन शीलता c<xhA blfy; n"k और समाज के व्यापकहित में राजभाषा हिन्दी के प्रति जनता और ljdkjh&rU= nkuk dk vf/kd l vf/kd lonu"khy vkj lfØ; cuk, tku dh vko";drk gA

lnHk xUFk&

1- प्रयोजनमूलक हिन्दी–विनोद गोदरे–पृष्ठ सं0 14

2- हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास– उदरनारायण तिवारी–पृष्ठ सं0–32

3- हिन्दी भाषा की संरचना–डॉ0 भोलानाथ तिवाड़ी–पृष्ठ सं0–55

4- भाषा विज्ञान–रामदेव त्रिपाठी–पृष्ठ सं0–62

5- हिन्दी का अस्मिता की राजभाषा नीति–रामवीर सिंह–पृष्ठ सं0–60